262
901 P
H
Microfilm

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1264
10/21

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 901

V/20|1

891.431
T873Va

Vyakul Bharat - N010

* राष्ट्रीय पुष्प का प्रथम गुच्छ *

व्याकुल भारत

दब कर न रहना ना स्वार्थ में बिताना दिन,
प्रेम एकता का मन्त्र यूंही फूंक जाना है।
उन्नति-शिखर पर राजनीति-मन्दिर में,
दिल के असंख्य घाव जाकर दिखाना है॥
भारत अपराधी है मांगने से स्वत्व निज,
अन्य राष्ट्र वालों को रो रो कर जनाना है।
स्वदेश गुण गाना औ निभाना वीर बाना है,
शान्ति के प्रचार हेतु जीवन गँवाना है॥

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
29 FEB. 1932
Reg No ....

प्रकाशक और संग्रहकर्ता :—

रामकृष्ण त्रिपाठी

ग्राम कुल्हागाड़ा, पो० बेथर

जिला उन्नाव।

प्रथम बार] १९३१ [मूल्य)॥ पैसे

गायन १

तुम समझते हो कि है खेल हमारा झंडा,
रूह भारत की है आलम का है प्यारा झंडा ।
कुछ खबर भी है तुम्हें कुछ मालूम भी है,
आन है शान है सब कुछ है हमारा झंडा ॥

कभी सीने से लगाते हैं कभी आँखों से,
अहले भारत का है भारत का यह प्यारा झंडा ।
दिले हसरत है यही दिल की तमन्ना है यही,
बैठते उठते करें तेरा नजारा झंडा ॥

इसकी एक एक अदा दिल को लुभा लेती है,
कोई ऐसा भी है जिसको नहीं प्यारा झंडा ।
लुत्फ़ तो जब है कि ऐ मेरे शहीदाने वतन,
मरके भी हाथ से छूटे न हमारा झंडा ॥

अपने दुशमन के लिए वक्त पै बन जाता है,
कभी नस्तर कभी खञ्जर कभी आरा झंडा ।
है जो यह जोशे वतन हुब्बे वतन ऐ बिस्मिल,
कभी गड़ जायगा संसार में हमारा झंडा ॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 901
Date 24.12.51
GOVT. OF INDIA

गायन २

कहाते थे जो जहां के आली—
थीं जिनकी दुनिया में शान आली।
गमो मुसीबत में आज कैसे
वो हिन्द वाले पड़े हुए हैं॥

कभी जिन्हों की दहाड़ से ही—
था काँपता ये तमाम आलम।
वो आज शेरे बबर भी गर्दन
कफस में डाले पड़े हुए हैं॥

गिरी थी शमशीर बर्क बनकर—
हमेशा रन में उदू के सर पर।
उन्हींके हथियार औ रिसालों में ही
पुराने ताले पड़े हुए हैं॥

लुटा दिया ताजो तख्त अपना—
घरेलु झगड़े हमेशा करके।
इसी से ये सब बहते आँसू
दिलों मे छाले पड़े हुए हैं॥

किया है जो कुछ भुगत रहें हैं
न कोई इनका दिखाता साथी।
सुनाऊं क्या मैं कहानी दुख की
जबां में ताले पड़े हुए हैं॥

गायन ३

फँस रहे हैं अब कफस में
लब हिलाना है मना।
भूख से तड़फें मगर
आंसू बहाना है मना ॥
ले गये सारा खजाना
लूट कर अपने वतन ।
बच रहा जो कुछ हमें
खाना खिलाना है मना ।
जल रहे उनके घरों में
झाड़ औ फानूस खूब ।
हम गरीबों के यहां
दीया जलाना है मना ॥
भूख का शिकवा अगर
हमने कभी उनसे किया।
डांट कर घुड़की मिली
रोटियां खाना है मना ॥
अन्दलीबों को पकड़ कर
बन्द करना चाहते ।
साथियों के घर हमें
आना जाना है मना ।
कोई कमी हममें नहीं
हैं पूछते हम इस लिए।
सभ्यता की दौड़ में क्यों
सर उठाना है मना ॥

गायन ४

बाग से सर सर का झोंका आशियाना ले गया

अन्दलीबों को कफस में आबदाना ले गया ॥

कुछ गुलोंगुलचीं का शिकवा बुल बुले भारत न कर।

तू तो पिंजड़े में है तेरा चह चहाना ले गया॥

कौन कहता है जबरदस्ती से हम पकड़े गये ।

जेल में खुद हमको शौके जेलखाना ले गया ॥

क्यों घटा इत्तचार की छाये न अहले हिन्द पर।

झोलियाँ भर कर बगरना कुल ज़माना ले गया॥

सूमये किस्मत से एक दाने को हम तरसा किये ।

बागवाँ के साथ धाला कुल खजाना ले गया ॥

भूख से क्यों कर न तड़पे हिन्द के बच्चे तलक

खींच कर राली बिरादर दाना दाना ले गया ॥

गायन ५

हवा बदली नजर आती

है देखो अब जमाने को।

शवा कह दे तू उनसे यह

कि "रोकें अब निशाने को"

यहाँ आये थे तुम हमसे

हृदय अपना मिलाने को

नहीं मालूम था आख़िर
बढ़ोगे तुम सताने को
सताया खूब है तुमने
सताये जाओगे तुम भी।
तरस जाओगे आख़िर तुम
हमारे पास आने को॥
अगर तुमने नहीं चेता
न छोड़ा चाल बेढंगी।
भुलाई शर्म अपनी औ
लिया खंजर मिटाने को॥
तो हमभी आज कहते हैं
नहीं कुछ अब छिपायेंगे।
लड़ा देंगे सभी ताकत
मुकद्दर आजमाने को॥
रुलाया खूब है तुमने
रुलाये जाओगे तुम भी॥
हुआ है वक्त आमादा
तुम्हें भी अब रुलाने को।
समय सबका नहीं रहता
हमेशा एक सा हरगिज़
तवारिख़ खुद बताती है
नहीं कुछ है सिखाने को॥

गायन ६

देखें गुलाम कौम में मुल्क के काम आये कौन ?
माता पड़ी है कैद में आकर के इसे छुटावे कौन ?

घोसा से गमगुसार कौम साहसे सहसवार कौम
कहां है फौज़दार कौम रञ्जो अलम उठाये कौन ?

असफाक उल्ला सा श्री बबर और उसके हम सफ़र
जाने सभी गये किधर ढूंढ़ के उनको लाये कौन ?

लाडिये मन चला नहीं रोसने दिल जला नहीं
बिस्मिल वो बावला नहीं बाजिये जां लगाये कौन ?

कौन थे बदहवास है किसके ज़ुबां के पास हैं
कौन यतीन्द्र दास है आन पै जां गँवाये कौन ?

दस का बसर है कौन भगत शेर नर है कौन
राजगुरु निडर है कौन शौक से सर कटाये कौन ?

दिल में वतन का दर्द है लब पे जो आह सर्द है
कोई हितैषी मर्द है शूली पै चढ़ने जाय कौन ?

संस्कृत पुस्कालय प्रयाग

विक्रयार्थ तैयार पुस्तकें ।

गज़लों का गुच्छा ८० पुस्तकें सिर्फ १॥)
उभरता जोबन
जालीदार अँगिया
मीठी छुरी
पेरिस हूर
हुस्न की पुजारी
उभरा हुआ घूंघट
रूपदार आबरू वगैरह २
रामायण बड़ा १॥)
गुटका ।≈)
तथा ॥)
सुन्दर काण्ड ≤)
हनुमान चालीसा)॥

एकोदिष्ट श्राद्ध भा० टीका ≈)
कर्म विपाक भाषा टी० १।)
ज्योतिषसार भा० टी० १॥)
दुर्गापाठ भा०टी० खुली ॥≈)
तथा जिल्द १)
उपनयन मूल ।)
भा० टी० ।≈)
विश्राम सागर २)
तथा गुटका ॥।)
छन्द कौमुदी ।≈)
गणित कौमुदी ।≈)
रघुवंश पूरा १।)
मूल रामायण ।≈)

सब प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता :—

लालता प्रसाद दीक्षित बुकसेलर

चौक, प्रयाग ।

मुद्रक—पं० बेनीप्रसाद बाजपेयी, रंगेश्वर प्रेस, प्रयाग ।